आचार्य मानतुंग

जीवन-परिचय : आचार्य मानतुंग भक्तिपूर्ण काव्य के सृष्टा कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनका प्रसिद्ध स्तोत्र 'भक्तामर' दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में समानरूप से मान्य हैं। इनकी यह रचना इतनी लोकप्रिय रही है कि उसके प्रत्येक पद्य के प्रत्येक चरण को लेकर स्तोत्रकाव्य लिखे जाते रहे हैं।

आचार्य मानतुंग काशी देश के निवासी धनदेव के पुत्र थे।

आचार्य मानतुंग को हर्ष अथवा राजा भोज के समकालीन माना जाता है। ऐतिहासिक विद्वान, मानतुंगाचार्य की स्थिति हर्षवर्धन के समय की मानते हैं। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ विद्वान पं. नाथूराम प्रेमी ने भी आचार्य मानतुंग को हर्षकालीन माना है। अत: इन सब कथनों के आधार पर आचार्य मानतुंग का समय 6वीं शताब्दी का उत्तरार्ध या 7वीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना जा सकता है।

आचार्य मानतुंग के जीवन-चरित्र के बारे में अनेकों चर्चाएँ प्रसिद्ध हैं, परन्तु एक विशेष कथा यह है कि—

मालवा प्रान्त के उज्जैन नगर में राजा भोज का शासन था। राजा भोज ने आचार्य मानतुंग को शास्त्रार्थ करने राज्यसभा में बुलाया। चूंकि दिगम्बर साधु इस प्रकार से राजद्वार जाते नहीं हैं, अत: आचार्य ने राजा की आज्ञा ठुकरा दी। बार-बार प्रयास करने पर भी जब आचार्य राजदरबार में नहीं गये तो सैनिक बलपूर्वक आचार्य को उठाकर राज्यदरबार में ले गये। आचार्य मानतुंग इसे मुनिचर्या के विपरीत समझकर मौन धारण कर ध्यान में बैठ गये।

राजा के बार-बार प्रयास करने पर भी जब आचार्य कुछ नहीं बोले तो अन्य दरबारीगण आचार्य को महामूर्ख सिद्ध करने लगे, तब राजा ने क्रोधित होकर उन्हें हथकड़ी और बेड़ी डलवाकर अड़तालीस कोठरियों के भीतर एक बन्दीगृह में कैद करवा दिया और मजबूत ताले लगवा दिये।

मुनिश्री तीन दिनों तक बन्दीगृह में रहे। चौथे दिन भक्तामरस्तोत्र की रचना

की। ज्यों ही आचार्य मानतुंग ने 48 काव्य पढ़े, त्यों ही हथकड़ी, बेड़ी और 48 ताले टूट गये और खट-खट सारे दरवाजे खुल गये। बार-बार ताले लगाए जाने पर भी पुन: सारे ताले खुलते गये और आचार्य मानतुंग राज्यसभा में जा पहुँचे।

तपस्वी मुनिराज के दिव्यशरीर की आभा (चमक) के प्रभाव से राजा का हृदय काँप गया। उसने आचार्य के चरणों में झुककर उनसे क्षमायाचना की, उन्होंने नाना प्रकार से आचार्य की स्तुति की और श्रावक के व्रत ग्रहण कर अपने राज्य में जैनधर्म का खूब प्रचार किया।

रचना-परिचय : आचार्य मानतुंग की दो रचनाएँ उपलब्ध हैं—

1. **भक्तामर स्तोत्र :** इसमें 48 पद्य हैं जो वसन्ततिलका छन्द में लिखे गये हैं। इसमें आदि तीर्थंकर ऋषभनाथ की स्तुति की गयी है, इसीलिए इसका नाम 'आदिनाथस्तोत्र' भी प्रचलित है। इस स्तोत्र-काव्य में भक्ति, दर्शन और काव्य की त्रिवेणी एक साथ प्रवाहित होती है।

2. **भयहर स्तोत्र :** आचार्य मानतुंग की दूसरी रचना 'भयहर' स्तोत्र है। यह प्राकृत भाषा के 21 पद्यों में रचा गया है। इसमें भगवान पार्श्वनाथ का स्तवन किया गया है।